https://www.echetana.com/Vol.-10, No.-02, April-June 2025, pp. 47-49

CHETANA
International Journal of Education (CIJE)

Peer Reviewed/Refereed Journal
ISSN : 2455-8279 (E)/2231-3613 (P)

Impact Factor
SJIF 2025 - 8.445

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

राजस्थान के कोटा संभाग के उच्च माध्यमिक विद्यालय स्तर के बालिका विद्यालय व सह–शिक्षा विद्यालय में अध्ययनरत बालिकाओं के आत्मविश्वास एवं समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन

सोनाली त्यागी
शोधार्थी
डॉ. दीपक पंचौली
शोध पर्यवेक्षक
Kota College of Education, Ranpur, Kota
E-mail-sonalityagi062012@gmail.com, Mobile-8233193583

……………………………………………………………….
First draft received: 05.04.2025, Reviewed: 20.04.2025
Final proof received: 25.05.2025, Accepted: 03.06.2025

शोध-सारांश

शिक्षा ही बालकों की जन्मजात योग्यताओं का स्वाभाविक एवं सामंजस्यपूर्ण विकास कर संतुलित व्यक्तित्व का निर्माण करती है उसे जीवन और नागरिकता के कर्तव्यों एवं दायित्वों के लिए तैयार करती है उनके विचार, दृष्टिकोण एवं व्यवहार में भी परिवर्तन करती है जो देश एवं समाज के लिए हितकर होता है किसी भी राष्ट्र की सफलता उस राष्ट्र के बालकों पर निर्भर करती है। विद्यार्थी राष्ट्र की धरोहर होते हैं अतः सुयोग्य नागरिक बनाने के लिए श्रेष्ठतम शिक्षण पद्धति द्वारा वैयक्तिक भिन्नताओं के अनुरूप स्वअनुशासन पर आधारित स्व शिक्षा दक्षताओं की सम्प्राप्ति में सहायक न्यूनतम अधिगम स्तर राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 पर आधारित उद्देश्यपूर्ण शिक्षा प्रदान की जानी चाहिए। वर्तमान में विश्व के प्रगतिशील राष्ट्रों में विद्यालय व्यवस्था और इसकी उपयोगिता के प्रति सन्देह प्रकट किया गया और अनेक बातें कही गयी हैं विद्यालयी शिक्षा से समाज के सभी वर्ग के लोग बालक तथा बालिकाओं में अनेक प्रकार के गुणों को विकसित होते देखना चाहते हैं और साथ ही साथ विभिन्न क्षमताओं को बालकों में विकसित कराना चाहते हैं जिनसे बालक और बालिकाओं, समुदाय, समाज, राष्ट्र तथा समस्त विश्व को लाभ पहुँचे।

मुख्य शब्द : *स्वअनुशासन, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986, विद्यालयी शिक्षा आदि.*

प्रस्तावना

किसी राष्ट्र के निर्माण में शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है जिसमें विद्यार्थी मुख्य भूमिका निभाते हैं। शिक्षा ही बालकों की जन्मजात योग्यताओं का स्वाभाविक एवं सामंजस्यपूर्ण विकास कर संतुलित व्यक्तित्व का निर्माण करती है उसे जीवन और नागरिकता के कर्तव्यों एवं दायित्वों के लिए तैयार करती है उनके विचार, दृष्टिकोण एवं व्यवहार में भी परिवर्तन करती है जो देश एवं समाज के लिए हितकर होता है किसी भी राष्ट्र की सफलता उस राष्ट्र के बालकों पर निर्भर करती है। विद्यार्थी राष्ट्र की धरोहर होते हैं अतः सुयोग्य नागरिक बनाने के लिए श्रेष्ठतम शिक्षण पद्धति द्वारा वैयक्तिक भिन्नताओं के अनुरूप स्वअनुशासन पर आधारित स्व शिक्षा दक्षताओं की सम्प्राप्ति में सहायक न्यूनतम अधिगम स्तर राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 पर आधारित उद्देश्यपूर्ण शिक्षा प्रदान की जानी चाहिए। वर्तमान में विश्व के प्रगतिशील राष्ट्रों में विद्यालय व्यवस्था और इसकी उपयोगिता के प्रति सन्देह प्रकट किया गया और अनेक बातें कही गयी हैं विद्यालयी शिक्षा से समाज के सभी वर्ग के लोग बालक तथा बालिकाओं में अनेक प्रकार के गुणों को विकसित होते देखना चाहते हैं और साथ ही साथ विभिन्न क्षमताओं को बालकों में विकसित कराना चाहते हैं जिनसे बालक और बालिकाओं, समुदाय, समाज, राष्ट्र तथा समस्त विश्व को लाभ पहुँचे।

आत्मविश्वास वस्तुतः एक मानसिक एवं आध्यात्मिक शक्ति है आत्मविश्वास से ही विचारों की स्वाधीनता प्राप्त होती है तथा इसके कारण ही महान कार्यों के सम्पादन में सहजता से सफलता मिलती है। यह आत्म रक्षा के लिए ब्रह्मास्त्र का कार्य करता हैं जो व्यक्ति आत्मविश्वास से ओतप्रोत होते हैं उन्हें अपने भविष्य के लिए किसी प्रकार की चिन्ता परेशान नहीं करती। आत्मविश्वास रहित व्यक्ति जिन सन्देहों व शंकाओं से दबे रहते है, एक आत्मविश्वासी व्यक्ति उनसे सदैव मुक्त रहता है।

आत्मविश्वास वह अदभुत शक्ति है जिसके बल पर नितान्त एकाकी व्यक्ति हजारों विपत्तियों एवं शत्रुओं का सामना कर सकता है। निर्धन व्यक्तियों की सबसे बड़ी पूंजी और सबसे बड़ा सम्बल आत्मविश्वास ही है इस संसार में जितने भी सफल व्यक्ति हुए है या हो रहे है उन सबका मूल कारण उनके अन्दर प्रचुर मात्रा में आत्मविश्वास का होना ही है।

आत्मविश्वास हमारी आत्मा का सम्बल है जो हमें कुछ करने या कुछ पाने की प्रेरणा एवं प्रोत्साहन देता है। कामयाबी और आत्मविश्वास का गहरा संबंध है या कहें कि वे दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। छोटे से छोटे कार्य में कामयाबी के लिए हमारे अन्दर आत्मविश्वास का होना बहुत आवश्यक है इसी तरह अपने आत्मविश्वास को बढ़ाने के लिए हमें सफलता प्राप्त करना भी आवश्यक है।

मनोवैज्ञानिकों के अनुसार, ''आत्मविश्वास स्वयं में एक विश्वास है, इस प्रकार का विश्वास जो व्यक्ति के जीवन की चुनौतियों को सम्पन्न करने और सफल होने का संकेत देता है। आत्मविश्वास होना वयक्ति की योग्यता पर खुद का विश्वास है।''

समायोजन एक प्रक्रिया है जिसके द्वारा एक व्यक्ति अथवा समूह अपने भौतिक अथवा सामाजिक पर्यावरण के साथ सामंजस्यपूर्ण एवं स्वस्थ संबंध स्थापित करता है। समायोजन का अर्थ है जीवन की आवश्यकताओं और मांगों से अपनी शक्ति और सामर्थ्यानुसार अनुकूल स्थिति बनाकर चलना। लक्ष्य प्राप्ति के लिये परिस्थितियों को अनुकूल बनाना या परिस्थितियों के अनुकूल हो जाना ही समायोजन कहलाता है। यह समायोजन व्यक्ति क्षमता व योग्यता के अनुसार करता है।

आधुनिक दृष्टिकोण वाले मनोवैज्ञानिक का मत है कि वही व्यक्ति समायोजन स्थापित करने में सफल हो सकता है जो कि पर्यावरण के बल और उसके कष्टपूर्ण उद्दीपकों के अनुकूल प्रतिचार कर सकने योग्य होता है। विभिन्न प्रकार के अनुकूल और प्रतिकूल पर्यावरण से घिरा हुआ व्यक्ति विभिन्न जैविक शक्तियों के योग से एवं मनोवैज्ञानिक अभिप्रेरकों से प्रेरित होकर अपने इच्छित लक्ष्य की ओर बढ़ता ही रहता है।

लेण्डिस तथा बाल्स, '' समायोजन का अर्थ है नित्य प्रति के जीवन के मतभेदों, अन्तर्द्वन्द्वों और निर्णय को व्यवस्थित, क्रमबद्ध और एकरस बना लेना अथवा अपने अस्तित्व को बनाये रखने के लिए व्यावहारिक तत्वों में नियमन या व्यवस्थापन बना लेना है।''

एल. एस. शेफर, ''समायोजन वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा कोई जीवधारी अपनी आवयकताओं तथा इन आवश्यकताओं की संतुष्टि से सम्बन्धित परिस्थितियों में संतुलन बनाये रखता है।''

समायोजन से तात्पर्य है जीवन की आवश्यकताओं एवं समस्याओं को अपनी शक्ति एवं सामर्थ्य से पूर्ण एवं सुलझा कर मानवीय लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु उन्हें अपने अनुकूल करके चलना। लक्ष्य प्राप्ति के लिए परिस्थितियों को अपने अनुकूल बनाना ही समायोजन कहलाता है।

समस्या का औचित्य

आवश्यकता की संतुष्टि जब किसी उपलब्ध साधन द्वारा नहीं हो पाती है तब एक समस्या उत्पन्न हो जाती है। इसका अर्थ यह हुआ कि आवश्यकता की संतुष्टि के साधन या मार्ग में 'बाधा' ही समस्या है। जैसे ही समस्या समाधान के साधन खोज लिए जाते है, आवश्यकता की संतुष्टि हो जाती है तथा समस्या का अंत हो जाता है। इस प्रकार आवश्यकता जितनी प्रबल होगी एवं अवरोध जितना तीव्र होगा, समस्या भी उतनी ही गम्भीर होगी।

करलिंगर, ''समस्या एक प्रश्नवाचक वाक्य अथवा विवरण है जिसमें दो या दो से अधिक चल राशियों में सहसम्बन्ध ज्ञात किया जाता है।''

शिक्षा प्राप्त करना सभी बालक बालिकाओं का मौलिक अधिकार है, चाहे वह किसी भी जाति, धर्म, समुदाय, क्षेत्र, लिंग या वर्ग के हो। इस हेतु विद्यालय व्यवस्था के अन्तर्गत शिक्षा प्रदान करने की व्यवस्था की गई है। इन संस्थाओं में शिक्षा ग्रहण करने वाली छात्राओं के विज्ञान एवं समायोजन में अन्तर पाया जाता है। बालिका विद्यालयों व सहशिक्षा विद्यालयों में पढ़ने वाली छात्राओं के बीच पाये जाने वाले इस अन्तर को शिक्षण संस्थाऐं शिक्षक व अभिभावक भी नहीं जान पाते। माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्राऐं किशोरावस्था से गुजर रही होती है एवं इस काल में सीखा गया ज्ञान ही उनके भविष्य की दिशा निर्धारित करता है।

शोधार्थी के मस्तिष्क में यह सवाल आया कि क्या विद्यालय के प्रकार व वातावरण का बालिकाओं के आत्मविश्वास एवं समायोजन पर कोई प्रभाव पड़ता है अथवा नहीं तथा इन छात्राओं का आत्मविश्वास एवं समायोजन किस प्रकार का होता है ? इन्हीं प्रश्नों का उत्तर खोजने हेतु शोधार्थी ने ''उच्च माध्यमिक विद्यालय के बालिका विद्यालय व सहशिक्षा विद्यालय में अध्ययनरत बालिकाओं के आत्मविश्वास एवं समायोजन का अध्ययन'' समस्या पर शोध करने का मानस बनाया।

शोध उद्देश्य

1. कोटा संभाग के उच्च माध्यमिक स्तर के बालिका विद्यालय में अध्ययनरत बालिकाओं के आत्मविश्वास का पता लगाना।
2. कोटा संभाग के उच्च माध्यमिक स्तर के सहशिक्षा विद्यालय में अध्ययनरत बालिकाओं के आत्मविश्वास का पता लगाना।
3. कोटा संभाग के उच्च माध्यमिक स्तर के बालिका विद्यालय में अध्ययनरत बालिकाओं के समायोजन का पता लगाना।
4. कोटा संभाग के उच्च माध्यमिक स्तर के सहशिक्षा विद्यालय में अध्ययनरत बालिकाओं के समायोजन का पता लगाना।
7. कोटा संभाग के उच्च माध्यमिक स्तर के सहशिक्षा विद्यालय में अध्ययनरत बालिकाओं के आत्मविश्वास एवं समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करना।
8. कोटा संभाग के उच्च माध्यमिक स्तर के बालिका विद्यालय व सहशिक्षा विद्यालय में अध्ययनरत बालिकाओं के आत्मविश्वास एवं समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध परिकल्पनाएँ

1. कोटा संभाग के उच्च माध्यमिक स्तर के बालिका विद्यालय में अध्ययनरत बालिकाओं के आत्मविश्वास एवं समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. कोटा संभाग के उच्च माध्यमिक स्तर के सहशिक्षा विद्यालय में अध्ययनरत बालिकाओं के आत्मविश्वास एवं समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तकनीकी शब्दों का परिभाषीकरण

1. **विद्यालय –** शाब्दिक दृष्टि से 'विद्यालय' शब्द दो शब्दों 'विद्या'' तथा 'आलय' से मिलकर बना है। 'विधा' शब्द का अर्थ है ज्ञान तथा 'आलय' का अर्थ है मंदिर है। जहाँ ज्ञान की उपासना की जाती है।
2. **बालिका विद्यालय** बालिका विद्यालय में सिर्फ छात्राएँ ही अध्ययन करती है तथा इन छात्राओं में सभी वर्गों (उच्चनिम्न) से संबंध रखने वाली बालिकाएँ होती है।
3. **सहशिक्षा विद्यालय** सह शिक्षा दो शब्दों का संयोग है सामूहिक शिक्षा अर्थात् **''ऐसे विद्यालय जिनमें छात्र एवं छात्राएँ साथसाथ** शिक्षा ग्रहण करते है। सहशिक्षा विद्यालय कहलाए जाते है।''
4. **आत्मविश्वास** आत्मविश्वास वस्तुतः एक मानसिक एवं आध्यात्मिक शक्ति है आत्मविश्वास से ही विचारों की स्वाधीनता प्राप्त होती है तथा इसके कारण ही महान कार्यों के सम्पादन में सहजता से सफलता मिलती है।
5. **समायोजन –** भिन्न–भिन्न प्रकार की कुण्ठायें, तनाव, द्वन्द्व आदि उत्पन्न होने लगेंगे। इन सबसे बचने के लिए व्यक्ति को कुछ विशेष प्रयास करने पड़ते है। इन प्रयत्नों को ही समायोजन कहा जाता है।

अध्ययन का परिसीमन

1. प्रस्तुत अध्ययन में केवल राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की बालिकाओं को ही सीमित किया गया है।
2. प्रस्तुत अध्ययन राजस्थान की कोटा संभाग के उच्च माध्यमिक स्तर की छात्राओं तक ही सीमित है।

संबंधित साहित्य का अध्ययन

1. **शर्मा, गोविन्द (2021)** ने माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के व्यावसायिक समायोजन तथा कार्य संतुष्टि के मध्य सम्बंध का अध्ययन किया। अध्ययन का उद्देश्य माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के व्यावसायिक संतुष्टि तथा व्यावसायिक समायोजन का अध्ययन करना था। माध्यमिक विद्यालयों के 150 शिक्षकों का न्यादर्श रूप में चयन किया गया डॉ. एस.के. सक्सेना द्वारा निर्मित व्यवसायिक संतुष्टि स्केल का प्रयोग किया गया। निष्कर्षतः पाया कि व्यवसायिक समायोजन तथा व्यवसायिक संतुष्टि के मध्य सार्थक सम्बंध था।
2. **भगवानदास, के. ज्योति (2019)** ने सेकेण्डरी स्टेज के अधिगमकर्ताओं के आत्मविश्वास पर कार्य किया। कार्य का प्रमुख उद्देश्य अधिगमकर्ताओं के आत्मविश्वास में लिंग के आधार पर फर्क देखना निश्चित किया गया। सैंपल के तौर पर कक्षा 10 के 200 अधिगमकर्ताओं को चुना गया। डेटा का संकलन सेल्फ कांफीडेंस टेस्ट द्वारा किया गया। टी–टेस्ट की गणना के पश्चात निष्कर्षतः प्राप्त हुआ कि अधिगमकर्ताओं के आत्मविश्वास में लिंग के आधार पर प्राप्त अंतर में सार्थकता नहीं है।
3. **तिवारी, महेन्द्र मणि (2018)** ने अपने शोध पत्र सतना जिले के उच्चतर माध्यमिक स्तर पर शालेय समायोजन का विज्ञान समूह के छात्र–छात्राओं की शिक्षण अधिगम पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन में यह निष्कर्ष निकाला कि समायोजन और शिक्षण अधिगम के मध्य सार्थक संबंध है। जो विद्यार्थी विद्यालय में उचित समायोजन बना लेते है उनका शिक्षण अधिगम उच्च रहता है और छात्राओं की तुलना में छात्रों में यह संबंध अधिक पाया गया है। अतः यह भी कहा जा सकता है कि समायोजन और शिक्षण अधिगम में लिंग का प्रभाव भी पडता है।
4. **बरूआ और गौसाई (2017)** ने समायोजन के संबंध में शिक्षण पेशे के प्रति दृष्टिकोण पर एक जांच का निर्देश दिया। उन्होंने डिबूगढ़ क्षेत्र के सहायक शिक्षकों के लिए कुछ सांख्यिकीय कारको, उदाहरण के लिए, लिंग, वैवाहिक स्थिति, क्षेत्र, तैयार और अप्रशिक्षित, अनुभवी और अप्रशिक्षित के रूप में कॉलिंग दिखाने की दिशा में संशोधन और मन के फ्रेम के बीच एक नकारात्मक संबंध पाया गया।
5. **मालव, शीला (2015) ने** ''माध्यमिक स्तर पर एकल एवं संयुक्त परिवार के विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता व शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन।'' माध्यमिक स्तर के एकल परिवार के विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता औसत स्तर की पाई गई। माध्यमिक स्तर के संयुक्त परिवार के विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता अधिक पाई गई। माध्यमिक स्तर के एकल परिवार के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि अधिक पाई गई।
6. 6 **नामदेव, पुष्पा (2012)** ने माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के कार्य प्राथमिकता, व्यावसायिक समायोजन तथा कार्य संतुष्टि के मध्य सम्बंध का अध्ययन किया। अध्ययन का उद्देश्य माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के कार्य प्राथमिकता तथा व्यावसायिक संतुष्टि, व्यावसायिक समायोजन तथा कार्य संतुष्टि, व्यावसायिक समायोजन तथा कार्य प्राथमिकता के मध्य सम्बंध का अध्ययन करना था। शासकीय माध्यमिक विद्यालयों के 100 शिक्षकों का न्यादर्श रूप में चयन किया गया तथा प्रदत्त संकलन हेतु विवेक भार्गव तथा

राजेश भार्गव द्वारा निर्मित कैरियर प्रिफरेन्स रिकार्ड, स्वनिर्मित व्यवसायिक समायोजन सूची तथा डॉ. एस.के. सक्सेना द्वारा निर्मित व्यवसायिक संतुष्टि स्केल का प्रयोग किया गया। निष्कर्षतः पाया कि व्यवसायिक संतुष्टि तथा कार्य प्राथमिकता के मध्य सार्थक सम्बंध था। व्यवसायिक समायोजन तथा व्यवसायिक संतुष्टि के मध्य सार्थक सम्बंध था। जबकि व्यवसायिक समायोजन तथा कार्य प्राथमिकता के मध्य सार्थक सम्बंध नहीं था।

शोध विधि

अनुसंधान समस्या की प्रकृति तथा प्रस्तावित उद्देश्यों के स्वरूप को देखते हुये शोधार्थी द्वारा 'सर्वेक्षण विधि' का प्रयोग किया गया है।

शोध न्यादर्श

प्रस्तुत शोधकार्य में न्यादर्श के रूप में यादृच्छिक न्यादर्श विधि द्वारा राजस्थान के कोटा संभाग के (कोटा, बूदी, बारां और झालावाड़) की माध्यमिक स्तर की 80 बालिकाओं का चयन किया जायेगा। जिनमें से 40 बालिका विद्यालय और 40 सहशिक्षा विद्यालय से चयन किया गया है।

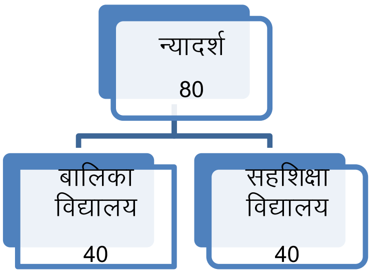

शोध में प्रयुक्त उपकरण

प्रस्तुत शोध कार्य में मानकीकृत उपकरण उपलब्ध होने के कारण आत्म विश्वास एवं समायोजन हेतु मानकीकृत उपकरणों का प्रयोग गया है ।

आत्मविश्वास प्रमापनी – बालिकाओं के आत्मविश्वास सम्बन्धी जानकारी प्राप्त करने हेतु शोधार्थी ने **डॉ. रेखा गुप्ता** द्वारा निर्मित प्रमापनी का प्रयोग किया गया है ।

समायोजन मापनी – बालिकाओं के समायोजन सम्बन्धी समस्याओं की जानकारी प्राप्त करने हेतु शोधार्थी ने **डॉ. ए.के.पी. सिन्हा व डॉ. आर.पी. सिंह** द्वारा निर्मित मापनी का प्रयोग किया गया है ।

अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकी

प्रस्तुत शोध में मूल आँकड़ों का विश्लेषण करने हेतु निम्न सांख्यिकी का प्रयोग किया गया है –

मध्यमान

प्रामाणिक विचलन

जेड टेस्ट

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. भटनागर, ए.बी. एवं भटनागर, मीनाक्षी (2006), भारत में शैक्षिक प्रणाली का विकास, आर.लाल बुक डिपो, मेरठ
2. डॉ. अरोड़ा, रीता एवं डॉ. पारीक, मथुरेश्वर (2005), उदीयमान भारतीय समाज एवं शिक्षा, शिक्षा प्रकाशन जयपुर
3. डॉ. अरोड़ा, रीता एवं प्रो. मारवाह, सुदेश (2006), शिक्षण एवं अधिगम के मनोसामाजिक आधार, शिक्षा प्रकाशन जयपुर
4. भार्गव, महेश (1997), मनेवैज्ञानिक परीक्षण एवं मापन, हरप्रसाद भार्गव बुक हाउस, शैक्षिक प्रकाशन, आगरा
5. क्रेच एण्ड क्रचफील्ड (1948), थ्यौरी एण्ड प्रॉब्लम्स ऑफ सोशल साइकोलॉजी मैग्रहिल पब्लिकेशन
6. पुरोहित, जगदीश नारायण एवं शर्मा, मुरली मनोहर (2002), भावी शिक्षकों के लिये आधारभूत कार्यक्रम राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर

पत्र–पत्रिकाएँ

1. एल्फ्रेड एल्डर, मानविकी शब्दकोष, मनोविज्ञान खण्ड, राजकमल प्रकाशन
2. बुच.एम.बी. (1989), भारतीय आधुनिक शिक्षा
3. भार्गव ऊषा (1987), किशोर मनोविज्ञान, राजस्थानी हिन्दी ग्रंथ,

Websites

- *www.indianresearchjournals.com*
- *www.shodhganga.com*
- *www.ikipedia.org/wiki/Adjustment*